कुमार जीवन - 28

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ कुमार ग्रुप भाग-दौड़ बहुत करता है। सेवा में भी बहुत भाग दौड़ करते हो ना। लेकिन सेवा के क्षेत्र में भाग दौड़ करते 'बैलेन्स' रखते हो? स्व सेवा और सर्व की सेवा दोनों का बैलेन्स सदा रहता है। बैलेन्स नहीं होगा तो सेवा की भाग दौड़ में माया भी बुद्धि की भाग दौड़ करा देती है। बैलेन्स से कमाल होती है। **बैलेन्स रखने वाले का परिणाम सेवा में भी कमाल होगी। नहीं तो बाहरमुखता के कारण कमाल के बजाए अपने वा दूसरों के भाव स्वभाव की धमाल में आ जाते हो।** तो **सदा सर्व की सेवा के साथ-साथ पहले स्व सेवा आवश्यक है। यह बैलेन्स सदा स्व में और सेवा में उन्नति को प्राप्त कराता रहेगा।**

➳ _ ➳ कुमार तो बहुत कमाल कर सकते हैं। कुमार जीवन के परिवर्तन का प्रभाव जितना दुनिया पर पड़ेगा उतना बड़ों का नहीं। कुमार ग्रुप गवर्मेन्ट को भी अपने परिवर्तन द्वारा प्रभु परिचय दे सकते हो। गवर्मेन्ट को भी जगा सकते हो। लेकिन वह परिक्षा लेंगे। ऐसे ही नहीं मानेंगे। तो ऐसे कुमार तैयार है! **गुप्त सी.आई.डी. आपके पेपर लेंगे कि कहाँ तक विकारों पर विजयी बनें हैं।** आप सबके नाम गवर्मेन्ट में भेजे? 500 कुमार भी कोई कम थोड़े ही हैं। सबने लेजर में अपना नाम और एड्रेस भरा है ना। तो आपकी लिस्ट भेजें? सभी सोच रहे हैं पता नहीं कौन से सी.आई.डी. आयेंगे! जान बूझ कर क्रोध दिलायेंगे। पेपर तो प्रैक्टिकल लेंगे ना। **प्रैक्टिकल पेपर देने लिए तैयार हो?** बापदादा के पास सबका हाँ और ना फिल्म की रीति से भर जाता है। यह लक्ष्य रखो कि ऐसा रूहानी आत्मिक शक्तिशाली यूथ ग्रुप बनावें जो विश्व को चैलेन्ज करे कि हम रूहानी यूथ ग्रुप विश्व शान्ति की स्थापना के कार्य में सदा सहयोगी हैं। और इसी सहयोग द्वारा विश्व परिवर्तन करके दिखायेंगे। समझा क्या करना है। ऐसा पक्का ग्रुप हो। ऐसे नहीं आज चैलेन्ज करे और कल स्वयं ही चेन्ज हो जाएं। तो ऐसा संगठन तैयार करो। मैजारिटी नये-नये कुमार हैं। लेकिन लास्ट सो फास्ट जाकर दिखाओ। बैलेन्स की कमाल से विश्व को कमाल दिखाओ।

(24-4-1983)

➢➢ संगठन में आत्मा की परख / विकारों की परख

➳ _ ➳ संगठन में रहकर ही हमारी परीक्षा होती है

→ संगठन में रहकर ही हमें पता चलता है की हमने कितना विकारों पर विजय प्राप्त की है ?

■ और तभी हमें एहसास होता है की हमें अपने अन्दर अभी और कहाँ सुधार लाने की आवश्यकता है ?

➳ _ ➳ जंगलो पर संन्यास लेकर तो सिर्फ विकारों का दमन मात्र होता है

→ विकारों पर असली विजय तो इस संसार में रहकर ही प्राप्त की जा सकती है

➳ _ ➳ घर बार छोड़ कर मात्र आश्रम में आ जाने विकारों पर विजय प्राप्त नहीं होती

→ पहले आसक्ति घर में थी

- अब आसक्ति आश्रम में है

→ पहले आसक्ति लोकिक सदस्यों में थी

- आप आसक्ति क्लास के स्टूडेंट्स में हैं

→ पहले जमीन जायदाद के लिए झगड़ते थे

- अब तेरा एरिया- मेरा एरिया के लिए झगड़ते हैं

➳ _ ➳ विकार तो आत्मा के अंतर्मन में छिपे हुए हैं

→ इसका समबन्ध आश्रम या लोकिक घर से नहीं

- विकारों को बाहर आने के लिए बस एक Stimulus (उत्प्रेरक) चाहिए
  - ▶ और वह Stimulus उसे कहीं से भी मिल सकता है

➢➢ विकारों से मुक्त होने की विधि

➳ _ ➳ अच्छी आदतें तैयार करो / विकारों के विपरीत आदतें तैयार करो

→ देह भान की आदत से मुक्त होने के लिए

- आत्मा अभिमानी अवस्था की आदत तैयार करो

→ क्रोध से मुक्त होने के लिए

- शांत स्वरुप अवस्था की आदत तैयार करो

➳ _ ➳ बार बार एकांत में जाओ

➳ _ ➳ अंतर्मुखता का अभ्यास करो

➳ _ ➳ बार बार अभ्यास करो गुणों और शक्तियों का

→ करत करत अभ्यास जड़मति होत सुजान

→ एक दिन एक जीत

- Take One Day At A Time & Make It A Masterpiece